SET – 4

समूह – अ

बहुवैकल्पिक उत्तरों में से सही उत्तर चुनें।

1) हुंडरू का जलप्रपात पाठ है–

क. कहानी ख. निबंध ग. जीवनी घ. यात्रा– वृतान्त

2. 'इस्लाम की निगाह मे सब बराबर है'। किस पाठ की पंक्ति है ?

क. ठेस ख. खेमा ग. ईदगाह घ. बालगोबिन भगत

3. संबल का अर्थ होता है:–

क. कंबल ख. सुंदर ग. सहारा घ. अपना

4. बालगोबिन भगत को बेटा कैसा था ?

क. तेज ख. आलसी ग. कामचोर घ. मंदबुद्धि

5. "महान मंजिल पर पहुँचने के लिए मार्ग भी महान होना चाहिए"। किस पाठ की पंक्ति है ?

क. ठेस ख. ईदगाह ग. खेमा घ. हुंडरू का जलप्रपात

6. स्वर्णरेखा किस राज्य में बहने वाली नदी है ?

क. बिहार ख. झारखण्ड ग. पंजाब घ. हरियाणा

7. कलिंग से युद्ध के पश्चात अशोक किस धर्म का अनुयायी हो जाते हैं ?

क.जैन धर्म ख. बौद्ध धर्म ग. दोनों का घ. इनमें से किसी का नहीं

8. ईर्ष्या मनुष्य का कैसा दोष है ?

क. मानसिक ख.शारीरिक ग. चारित्रिक घ. इनमें से कोई नहीं

9. ईर्ष्या का संबंध ..... से होता है। पंक्ति को पूरा करें।

क. मनुष्य से ख. प्रेम से ग. प्रतिद्वंद्वियों से घ. दानवों से

10. तुम्हारी निंदा वही करेगा जिसकी तुमने भलाई की है। किन्होने कहा था

क.नेपोलियननेख.सिकंदर ने ग. नीत्से ने इ ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने

11. "अष्टशाहस्त्रिका प्रज्ञापारमिता" की पाण्डुलिपि कहाँ तैयार की गई थी ?

Sandhya Bhaw

क. विक्रमशिला विश्वविद्यालय ख. तक्षशिला विश्वविद्यालय ग. नालंदा विश्वविद्यालय घ. इनमें से कहीं नहीं

12. विक्रमशिला विश्वविद्यालय में छात्रों की संख्या कितनी थी ?

क. आठ हजार ख. चार हजार ग. दस हजार घ. पाँच हजार

13. किस तिब्बती लामा ने विक्रमशिला के पतन का वर्णन किया है ?

क. धर्मस्वामी ख. वीरभद्र ग. हरिभद्र ध. शांतिभद्र

14. समक्ष का अर्थ होता है ?

क. संपन्न ख. उत्तम ग. सामने घ. आँगन

15. "मनः+रथ" किस संधि का उदाहरण है ?

क. स्वर संधि ख. व्यंजन संधि ग. विसर्ग संधि घ. इनमें से किसी का नही

16. दो वर्णों के मेल से होने वाले परिवर्तन को कहते है-

क. संज्ञा ख. सर्वनाम ग. संधि घ. समास

17. संजू किस कक्षा में पढ़ती है ?

क. पाँचवी ख. छठी ग. सातवीं घ. आठवीं

18. 'लोकनायक' किन्हें कहा गया है ?

क. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ख. जयप्रकाश नारायण ग. कर्पूरी ठाकुर

घ. इनमें से किन्ही को नहीं

19. सोनी ने किस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया था ?

क.100मी0 ख.200मी0 ग.बाधादौड़ घ.400मी0 और 1600मी0

20. सोनी कहाँ की रहने वाली है ?

क. रोहतास ख. अररिया ग. सहरसा घ. कैमूर

21. कर्पूरी ठाकुर ने कितने रू0 प्रतिमाह की दर पर प्रधानाध्यापक का पद स्वीकार किया ?

क. 20 रू ख. 30रू ग. 40 रू घ. 50रू

22. भागलपुर कैम्प जेल में कैदियों की सुविधा के लिए कर्पूरी ठाकुर ने कितने दिनों का उपवास रखा ?

क. 10 दिन ख. 20 दिन ग. 25 दिन घ. 30 दिन

23. जो दीनो के बंधु हो उन्हें कहते है-

क. दीनबंधु ख. दिनबंधु ग. जनबंधु घ. इनमे से कोई नहीं

24. 'यशप्राप्त' में कौन सा समास है?

क. अव्ययी भाव ख. तत्पुरुष ग. द्विगु घ. कर्मधारय

25. जिस समास में दोनो पद प्रधान हो उसे कहते हैः-

क. तत्पुरुष ख. द्वंद्व ग. द्विगु घ. बहुब्रीहि

26 "प्रतीक्षा" का अर्थ होता है-

क. संभव ख. आसान ग. कठिन घ. इंतजार

27. "अग्नि" का पर्यायवाची है-

क. पवन ख. गगन ग. पावक घ. जल

28." चिकित्सा का चक्कर" पाठ के लेखक कौन हैं ?

क. प्रेमचंद ख रामवृक्ष बेनीपुरी ग. बेढब बनारसी घ. रामवृक्ष बेनीपुरी

29. मृत्यु के समय रानी लक्ष्मी बाई की की उम्र कितनी थी?

क. इक्कीस वर्ष ख. बीस वर्ष तेइस वर्ष घ. चौबीस वर्ष

30 शादी के बाद लक्ष्मी बाई कहाँ की रानी बनी?

क. कानपुर की ख. झाँसी की ग. ग्वालियर की घ. कहीं की नहीं

31. सुदामा चरित कविता के कवि हैं-

क. नरोत्तम दास ख. सूरदास ग. तुलसी दास घ. कबीरदास

32.रसगुल्ले छायावादी कविताओं की भाँति सूक्ष्म नहीं..... थे। पंक्ति को पूरा करें।

क. कड़े ख. बड़े ग. स्थूल घ. खट्टे

33. डॉक्टर चूहानाथ कातरजी की फीस कितनी थी?

क. चार रूपये ख. पाँच रूपये ग. छह रूपये घ. आठ रूपये

34. डॉक्टरों की फीस कब बढ़ जाती है?

क. सुबह में ख. शाम में ग. दोपहर में घ. रात में

35. दंत चिकित्सक ने एक दाँत तोड़ने के कितने रूपये माँगे ?

क. दो रूपये ख. एक रूपये ग. तीन रूपये घ. चार रूपये

36. दंत चिकित्सक ने नए दाँत बनवाने के लिए कितने रूपये माँगे ?

क. डेढ़ सौ ख. दौ सौ ग. तीन सौ घ. चार सौ

37. "अमृत" का विलोम शब्द है-

क. विष ख. चाँदनी ग. आसान घ. कठिन

38. सुदामा और कृष्ण थे-

क. दुश्मन ख. चालाक ग. बाल- सखा घ. इनमें से कोई नहीं

39. "द्वारिकाधीश" किन्हे कहा जाता है ?

क. सुदामा को ख.कृष्ण को ग. अर्जुन को घ. भीष्म को

40. "सुदामा चरित" कविता किस भाषा में लिखी गई है-

क. ब्रज ख. अवधी ग. प्राकृत घ. संस्कृत

41. "नैन" का अर्थ होता है-

क. आँख ख. मोहक ग. पगड़ी घ. मोहक

42. "भरपेट" में कौन सा समास है ?

क. द्विगु ख. कर्मधारय ग. अव्ययी भाव घ. तत्पुरूष

43. "सेवक" का पर्यायवाची है-

क. दास ख. दोष ग. सुत घ. पत्र

44. "उपयोग" का विलोम शब्द है-

क. अनुपयोग ख. आस्तिक ग. वियोग घ. संयोग

45. "कनक" का एक अर्थ है धतूरा और दूसरा-

क. सोना ख. लोहा ग. पानी घ. चाँदी

46. "ईदगाह" कहानी के लेखक हैं:-

क. प्रेमचंद ख. फणीश्वर नाथ रेणु ग.वंशीधर श्रीवास्तव घ.इनमे से कोई नहीं

47. "विकमशिला" पाठ है-

क. कहानी ख. जीवनी ग. यात्रा-वृतांत घ. निबंध

48. "उत्साहित" शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है?

क. इत ख. हित ग. उत् घ. इत्

49. "सिरचन" किस पाठ का पात्र है?

क. ठेस ख. कर्मवीर ग. खेमा घ. ईदगाह

50. सिरचन को घी की डाड़ी के साथ क्या पसंद था?

क. चावल ख. चूड़ा ग. रोटी घ. इनमें से कुछ नहीं

समूह - ब

1) निम्न में से किसी एक विषय पर 250-300 शब्दों में निबंध लिखें:- 1x10=10

1) जन्माष्टमी

2. गणतंत्र-दिवस

3. मेरी प्रिय पुस्तकः रामचरित मानस

4. नारी शिक्षा

5. डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद

2. छत्रावास मे स्थान देने के लिए प्राचार्य के पास एक आवेदन पत्र लिखें। 1x05=05

अथवा

दुकानदार एवं ग्राहक को मध्य हुए संवाद के लिखिए।

3. निम्न लिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें:- 2x05=10

दरअसल हम अपनी समस्याओं की चर्चा बहुत बढ़ा-चढ़ा कर करते है। समस्याएँ आने पर हम दूसरों की सहानुभूति चाहते हे। लेकिन सहानुभूति या दया से कोई समस्या हल नहीं होती । दरअसल हम मुश्किलों का रोना रोते हैं, लेकिन कभी समाधान के बारे में नहीं सोचते। हम हथियार डालते हुए यह मान लेते है, जैसे बड़ी भारी मुसीबत आ गई हो। दिन-रात इसी मुसीबत के बारे में सोचते रहते है, समस्या दिलों-दिमाग पर पूरी तरह छा जाती है। इस पूरी प्रकिया में स्वयं द्वारा किए गए कार्यो का मूल्यांकन करना भूल जाते है। यदि हम ऐसा करें,तो हो सकता है कि ऐसी स्थिति से बाहर निकलने में मदद मिल जाए परिस्थितियों का ठीक-ठीक मूल्यांकन करके आप आसानी से समाधान तक पहुँच सकते है। किसी भी समस्या का हल उसकी जड़ में होता है यदि आप गलत नहीं है तो हताशा से उबरने के लिए साहस से काम लीजिए। सफलता की सड़क पर चलने के दौरान केवल एक पत्थर का टुकड़ा उठाकर नहीं फेंकते, बल्कि एक तरह से पहाड़ तोड़ने का काम करते है।

1) समस्या आने पर हम क्या चाहते है ?

2. हम किसके बारे में नहीं सोचते ?

3. समस्या आने पर हम क्या करना भूल जाते है ?

4. हम समाधान तक कैसे पहुँच सकते है ?

5. समस्या का हल कहाँ होता हैं ?

4. निम्न लिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों कें उत्तर दें 2x05=10

आवश्यकता ने ही अनेक आविष्कारों को जन्म दिया है। जब-जब मनुष्य को किसी वस्तु की आवश्यकता अनुभव हुई, उसने उसे पाने खोजने या निर्मित करने का उपाय किया। बिना आवश्यकता के कभी कोई अविष्कार नहीं होता। वर्तमान जीवन में हमें अनेक सुख-सुविधाएँ प्राप्त हो रही है, उन सबका श्रेय विज्ञान के आविष्कारों को जाता है। आवागमन में दिक्कत महसूस होने पर द्रुतगाामी वाहनों का आविष्कार किया गया, विद्युत के आविष्कारों ने एक नई दिशा में सोचने को विवश कर दिया। नए नए आविष्कारों ने नई-नई वस्तुएँ प्रदान की हैं। मनुष्य की आवश्यकाताएँ बढ़ती जा रही हैं और नए-नए आविष्कारों की दिशा खुलती जा रहीं हैं। मनुष्य बुद्धि के विकास के साथ-साथ वातावरण के प्रति अपना समायोजन करना चाहता है।

1 आविष्कारों को किसने जन्म दिया ?

2. वर्तमान की अनेक सुख सुविधाओं का श्रेय किसे जाता है ?

3. द्रुतगामी वाहनों का आविष्कार कब हुआ ?

4. आविष्कारों ने हमें क्या प्रदान किये ?

5. मनुष्य क्या करना चाहता है ?

5. लघुउत्तरीय प्रश्नः 2x05=10

निम्न में से किन्ही पाँच के उत्तर दें:-

1 अमीना अपनी कोठरी में क्यों रो रही थी ?
2 हामिद मेंले में चिमटा क्यों लेता है ?
3 पतोहू बालगेबिन भगत को छोड़कर जाना क्यों नहीं चाहती थी ?
4 स्वर्णरेखा नदी किन जिलों से होकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है ?
5 "कनक" शब्द का प्रयोग किन-किन अर्थो में किया जाता हैं ?
6 गाँव के किसान सिरचन को क्या समझते थे ?
7 "ठेस" कहानी में आए विभिन्न पात्रों के नाम लिखिए।

6) दीर्घउत्तरीय प्रश्न 1x05=05

अपने पैरों पर पानी गिराने से खेमा को तसल्ली क्यों मिलती थी ?

अथवा

कर्पूरी ठाकुर ने लिफ्ट का प्रयोग सबके लिए आम क्यों कर दिया ?

समूह–ब

जन्माष्टमी

जन्माष्टमी का पावन पर्व भगवान श्रीकृष्ण की पवित्र स्मृति में, उनके जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है। इस पर्व का सम्बन्ध समग्र हिन्दू समाज के साथ है। जन्माष्टमी का त्योहार भाद्रपद के महीने में कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाता है। आज से लगभग पॉच हजार वर्ष पूर्व इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण का जन्म आधी रात के समय हुआ था। यह धार्मिक त्योहार तभी से मनाया जाता रहा है।

इस धार्मिक पर्व को मनाने के लिए आस्थावान लोग काफी पहले से तैयारी आरंभ कर देते है। ये लोग बड़े ही प्रेम श्रद्धा से व्रत रखते है। रात्रि को भगवान के मन्दिरों में जाकर पूजा–अर्चना करते है। आधी रात के समय जब श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। मंदिरों में शंख, घटें–घड़ियाल आदि बजाकर हर्ष प्रकट किया जाता है। और प्रसाद बाँटा जाता है। इस प्रसाद को ग्रहण करके भक्तजन अपना व्रत तोड़ते है।

जन्माष्टमी के दिन ग्रामों तथा नगरों में अनेक स्थानों पर झूले व झाँकियों आदि का प्रदर्शन होता है। इस अवसर पर कई दिन पूर्व से ही विविध प्रकार के मिष्ठान आदि बनाये जाने प्रारंभ हो जाते है। इस इस दिन मंदिरों की शोभा तो देखते ही बनती है मंदिरो पर रंगीन बल्बो की रोशनी की जाती है। मंदिरों की शोभा विशेष रूप से श्रीकृष्ण के जन्मस्थान मथुरा तथा वृन्दावन में देखने योग्य होती है। अनेक देवालयों एवं धार्मिक स्थानों पर इस दिन गीता का अखण्ड पाठ चलता है।

भारत के हिन्दु समाज में इस महान पर्व का आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक दोनों तरह का विशिष्ट महत्व है। यह त्योहार हमें जहाँ एक ओर श्रीकृष्ण के बाल रूप का स्मरण कराता है। वहीं दूसरी ओर अपना उचित अधिकार पाने के लिए कठोर संधर्ष और निष्काम कर्म के महत्व की शिक्षा भी प्रदान करता है। भगवान श्रीकृष्ण का संदेश निष्काम कर्म का संदेश है। उन्होंने युद्ध क्षेत्र में निराश, हताश अजुर्न को जो संदेश दिया, वह सदा के लिए न केवल भारत , अपितु सारे संसार को अपने कर्तव्य पर अडिग रहने की प्रेरणा देता है।

हिन्दुओं में श्रीकृष्ण को पूर्ण अवतार माना जाता है। हिन्दी साहित्य में भी उनके चारित्रिक गुणों के उपर काफी समृद्ध सामग्री मिलती है। इस पर्व से लोंगो को श्रीकृष्ण के गुणों को जानने अपनाने व उनसे सीख लेने की प्रेरणा मिलती है। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम जन्माष्टमी के पवित्र दिन भगवान श्रीकृष्ण के चरित्र के गुणों को ग्रहण करने का व्रत लें और अपने जीवन को सार्थक बनाएँ ।

गणतंत्र दिवस

शताब्दियों की परतंत्रता के उपरांत भारत 15 अगस्त ,1947 को स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्र होने पर देश के कर्णधारों ने भारत के नवीन संविधान को लागू किया । तभी से भारत का सर्वोच्च शासक राष्ट्रपति कहलाए। भारत का नवीन संविधान 26 जनवरी,1950को लागू किया गया और यह दिन भारत का गणतंत्र –दिवस कहलाया। भारत इस संविधान के अनुसार गणराज्य घोषित किया गया और तभी से 26 जनवरी का दिन प्रतिवर्ष गणतंत्र–दिवस के रूप में सारे भारतवर्ष में बड़ी धूमधाम से मनाया जाने लगा। भारत उसी दिन से सर्वप्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी , धर्मनिरपेक्ष , लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में प्रतिष्ठित है। यहां के नागरिकों को कई मौलिक अधिकार संविधान द्वारा प्रदत किए गए है।

26 जनवरी की तिथि का स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अपना विशेष महत्व है। सन् 1929 में रावी नदी के तट पर कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में स्वर्गीय पंडित जवाहरलाल नेहरू ने पूर्ण स्वराज की घोषणा की। 26 जनवरी ,1930 को उन्होंने प्रतिज्ञा की कि "जब तक हम पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त न कर लेंगें तब तक हमारा स्वतंत्रता आंदोलन चलता रहेगा और इसे प्राप्त करने के लिए हम अपने प्राणों की आहुति दे देंगे।" इसी कारण 26 जनवरी का दिन ही भारत के गणतंत्र की धोषणा के लिए चुना गया।

26 जनवरी ,1950 को भारत पूर्णरूपेण गणतन्त्र राज्य घोषित कर दिया गया। इसी दिन हम पूर्ण रूप से स्वाधीन हो गए। उस दिन चकवर्ती राजगोपालाचारी (गवर्नर जनरल) के स्थान पर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद हमारे राष्ट्र के प्रथम राष्ट्रपति बने। आज भी यह पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन भारत की राजधानी नई दिल्ली में राष्ट्रपति की राजकीय सवारी निकाली जाती है। विजय चौक पर राष्ट्रपति जी जल,थल एवं वायु सेना की सलामी लेते है। तीनों सेनाओं की टुकड़ियां मार्च करती हुई लाल किले तक पहुंची हैं। अनेक प्रांतो से आए लोक-नर्तक अपनी-अपनी वेशभूषा में अपने-अपने लोक-नृत्य प्रदर्शन तथा विभिन्न प्रकार की झांकियो से अपनी संस्कृति व प्रगति का परिचय देते है। प्रांतों के मुख्यालयों में भी इसी अनुरूप तैयारियां होती है। राज्यपाल अभिवादन ग्रहण करते है।

26 जनवरी की सायं को आतिशबाजी छोड़ी जाती है। तथा रात्रि के समय सरकारी भवनों पर रोशनी की जाती है। देश के सभी गांवो , स्कूलों व कॉलेजों में सभाएँ की जाती है। इन सभाओं में देश की एकता अखण्डता व स्वतंत्रता को बनाए रखने की प्रतिज्ञा की जाती है।

इस प्रकार 26 जनवरी, 1950 को देश में अपना संविधान , अपना राष्ट्रपति , अपनी सरकार तथा अपना राष्ट्रीय ध्वज हो जाने पर भारतवर्ष संसार का सबसे बड़ा गणतंत्र राष्ट्र बन गया। देश की गणतांत्रिक मर्यादा की सुरक्षा करना प्रत्येक नागरिक कर्तव्य है।

मेरी प्रिय पुस्तक : रामचरित मानस

हमारा देश बहुत प्राचीन है। देश में एक-से-एक अच्छी पुस्तकें भी है। लोग गीता, भागवत महाभारत, कुरान और न जाने कितने प्रकार की पुस्तकें पढ़ते है। किन्तु जनमानस में जो लोकप्रियता रामचरितमानस को मिली है, उतनी शायद और किसी ग्रंथ को भारत में प्राप्त नहीं हो पाई । मैं भी रामचरितमानस को अपना प्रिय ग्रंथ मानता हूँ।

रामचरितमानस को संवत् 1631 ई. में श्री तुलसीदास ने लिखा था। वे अपने जमाने के बहुत बड़े महात्मा थे। रोज काशी में गंगा-स्नान करते, रूखा-सूखा खाते और कोई -न -कोई पुस्तक लिखते।

रामचरित मानस में सात काण्ड हैं। पहले बालकाण्ड में भगवान राम का और उनके भाइयों का बालचरित वर्णन है। शुरू में मंगलाचरण में तुलसी ने सरस्वती और गणेश की विनती की है, इसके पश्चात भगवती पार्वती और शिव की स्तुति है। अपने गुरू की स्तुति करने के बाद वाल्मीकि ऋषि श्री हनुमान, सीताजी फिर अन्त मे भगवान राम की स्तुति है। तुलसीदास ने प्रत्येक काण्ड के आरंभ में स्तुतियां संस्कृत में लिखी हैं जो उनके उत्कृष्ट संस्कृत ज्ञान का परिचय देती है।

तुलसीदासजी का रामकथा लिखने और उसे आगे बढ़ाने का ढंग मनभावन है। बालकाण्ड में राम विवाह तक की कथा है। अयोध्या काण्ड दूसरा काण्ड है जिसमें कुछ दिन तो आनंद-मंगल रहता है फिर शुरू हो जाती है- गृह कलह। इस का आरंभ कराने वाली कैकयी की दासी मंथरा थी।

इसके बाद अरण्य , किष्किंधा , सुन्दर काण्ड की कथा है जिसमें तुलसी काव्य के माधुर्य के साथ-साथ रामचरित का आकर्षक वर्णन है। सुन्दर काण्ड में हनुमान की समझ, बुद्धि और बहादुरी का बहुत अच्छा वर्णन है। लंका काण्ड में राम-रावण युद्ध का रोमांचकारी वर्णन है। इसकी कथा से यह पता चलता है कि चोर की तरह सीता का हरण करने वाले रावण को अच्छी तरह सोचने -समझने का पूरा मौका देने के बाद ही राम को युद्ध करने का निर्णय लेना पड़ा।

उतर काण्ड में राम अयोध्या वापस आ जाते हैं। सारी प्रजा, माताएं , नागरिक हर्षित होते हैं। राजा राम समझदारी से और न्यायपूर्वक राज्य करते हैं तथा अपनी प्रजा को पूरी तरह प्रसन्न रखते है।

श्रीरामचरितमानस की भाषा , कथाशिल्प , पात्रों का चरित्र-चित्रण, भावों का प्रकटीकरण सभी कुछ अच्छा हैं। वह ऐसा महाकाव्य है जिसकी टक्कर का कोई काव्य ग्रंथ अब तक नहीं रचा गया। कुछ लोग कहते है। तुलसीदास वाल्मीकि के अवतार थे, जो लोक कल्याण के लिए पुनः आए और 'रामरितमारस 'जैसा अलौकिक ग्रंथ हमें दे गए।

नारी शिक्षा

आज के भारत में शिक्षा का काफी प्रचार हो गया है। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार भारत की संपूर्ण जनसंख्या का करीब 75 .06 प्रतिशत भाग शिक्षित है। भारत के संविधान के अनुच्छेद 45 में ये प्रावधान है कि 14 वर्ष तक की आयु के बच्चों को मुफ्त शिक्षा देना राज्य का कर्तव्य है। भारत में महिलाओं का 65.46 प्रतिशत भाग शिक्षित है। स्वतंत्रता के उपरांत हमारे देश में शिक्षा का व्यापक प्रचार हुआ है। केरल, मिजोरम, दिल्ली, महाराष्ट्र , गुजरात, पंजाब आदि राज्यों में शिक्षा का प्रतिशत बढ़ा है। केरल देश का ऐसा पहला राज्य है, जहाँ शत-प्रतिशत शिक्षित रहते है।

नारियों में शिक्षा की कमी के अनेक कारण रहे है। सबसे बड़ा कारण तो हमारी सदियों की गुलामी थी, जिसकी वजह से सयानी लड़कियों को मुसलमानों तथा अंग्रेजो के भय के कारण घर से बाहर नहीं निकलने दिया जाता था और उनके जिम्मे चूल्हा-चौका घर का इन्तजाम और बच्चों को जन्म देना तथा उनका लालन-पालन था। समय बदला और आज महिलाएं हर दिशा में आगे आ रही है।

प्राचीन भारत में महिलाओं का स्थान समाज में काफी महत्वपूर्ण था। महिलाएँ भी पुरूषों के साथ यज्ञों में भाग लेती थी युद्धों में जाती थी तथा शास्त्रार्थ करती थी। धीरे-धीरे महिलाओं का स्थान पुरूषों के बाद निर्धारित किया गया तथा पुरूषों ने महिलाओ के लिए मनमाने नियम बनाए और उनको अपना जीवन बिताने के लिए पिता, पति तथा पुत्र का सहारा लेने की प्रेरणा दी गई। मुगलों के शासनकाल में शिक्षा, कला साहित्य तथा अन्य विविध गुणों को प्राप्त करने की परिस्थितयां मिट सी गई थी।

अंग्रेजी शासन में शिक्षा प्रचार-प्रसार तो बढ़ा किन्तु जैसी शिक्षाा भारत के लिए उपयोगी हो सकती थी उसे अंग्रेजों ने सुलभ नहीं बनाया।

भारत में स्वतंत्रता आन्दोलन ने जोर पकड़ा । महिलाओं की शिक्षा के लिए स्वदेशी संगठनों ने अपना योगदान देना शुरू किया। रत्न, भूषण , प्रभाकर की परीक्षाएँ पंजाब विश्वविद्यालय द्वारा शुरू की गई। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा प्रथमा, मध्यमा, विशारद, साहित्य रत्न आदि परीक्षाएं ली जाने लगीं। प्रयाग से ही विद्याविनोदिनी परीक्षा जिसमें केवल महिलाएं ही बैठ सकती थी।इस प्रकार के अनेक प्रयास नारी शिक्षा के लिए किए गए।

आज हमारे देश की सुयोग्य बालिकाएं देश विदेश में रहकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही है। वे कुशल डॉक्टर इंजीनियर, आई.ए.एस अफसर तथा पुलिस की बड़ी नौकरियों एवं सेना में काम कर रही है। नर्सिंग , शिक्षा समाज तथा समुदाय सेवा में महिलाओं की संख्या काफी है। शिक्षा के प्रचार के कारण महिलाएं एक शिक्षक के रूप में भी अपनी विशिष्ट भूमिका निभा रही हैं ।

अब पुनः नारी शिक्षा को व्यापक तथा समय–सापेक्ष बनाने की नितान्त आवश्यकता है। सरकार 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चो के लिए मुफ्त व अनिवार्य शिक्षा देने को मूल अधिकार में शामिल कर लिया है।इसके अलावा बालिकाओं की शिक्षा के लिए सरकार कई तरह के प्रोत्साहन योजनाएँ भी चला रही हैं | ऐसी स्थिति में आशा की जा सकती है। कि कुछ समय बाद नारी शिक्षा में अपेक्षित स्तर तक सुधार संभव हो सकेगा।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति थें। ये भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ मान्यताओं के मूर्तिमान स्वरूप थें। सरलता तथा सादगी के प्रतीक राजेन्द्र बाबू को गांधीजी अजातशत्रु (जिसका शत्रु पैदा ही न हुआ हो) और देशरत्न कहते थे। सरोजनी नायडू ने उनकी गुणावली को जानते हुए अपनी काव्यमयी भाषा में उनके बारे में लिखा है कि ये ऐसे महापुरूष थे जिनकी लेखनी से भी कटुतापूर्ण कोई शब्द कभी नहीं लिखा गया।

3 दिसम्बर 1884 को एक मध्यमवर्गीय कायस्थ परिवार में बाबू राजेन्द्र प्रसाद का जन्म बिहार राज्य के सिवान जिले के जीरादेई गांव में हुआ था।इनके पिता का नाम महादेव सहाय था एवं माता का नाम कमलेश्वरी देवी था |डॉ.प्रसाद का विवाह राजवंशी देवी से हुआ था | मेधावी होने के कारण अध्यापक तथा उनके सम्पर्क में आने वाले सभी जन उनके गुणों और प्रतिभा के कायल थें। वकालत की डिग्री लेकर कलकत्ता एवं पटना उच्च न्यायालय में आपने वकालत कर धूम मचा दी। सन् 1917 में चम्पारण में गांधी जी के सम्पर्क में आते ही वकालत छोड़ कर स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े । आजादी से पहले सन् 1946 में बनी पहली अन्तरिम राष्ट्रीय सरकार में खाद्य आपूर्ति एवं कृषि मंत्री बनाए गए फिर 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान के अस्तित्व में आने पर भारतीय गणतंत्र में प्रथम राष्ट्रपति बने और लगभग 12 वर्षो तक इस पद को सुशोभित किया।

राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने कई ऐसे दृष्टान्त छोड़े जो बाद में उनके परवर्तियों के लिए मिसाल के तौर पर काम करते रहे |राजेन्द्र बाबू ने अपनी आत्मकथा के अतिरिक्त कई अन्य पुस्तकें भी लिखी हैं जिनमे 'इण्डिया डिवाइडेड' ; 'गाँधी जी की देन' 'भारतीय संस्कृति' आदि उल्लेखनीय हैं.|

,मई 1962 में राष्ट्रपति के पद का कार्यकाल समाप्त होने के बाद राष्ट्र ने उन्हें "भारत रत्न" की सर्वश्रेष्ठ उपाधि से सम्मानित किया |अपने जीवन के आखिरी महीने बिताने के लिए उन्होंने सदाकत आश्रम, पटना को चुना । यहीं पर 22 फरवरी, 1963 को एक महान् रिक्ति छोड़कर वे पंचतत्व में विलीन हो गए।

2:-

सेवा में,

प्राचार्य महोदय

राजकीयकृत उच्च विद्यालय सालिमपुर, पटना

द्वारा– वर्ग शिक्षक महोदय

विषयः– छात्रावास में स्थान देने के संबंध में।

महाशय,

सविनय निवेदन है कि मेरा गाँव स्कूल से बहुत दूरी पर स्थित है एवं आवागमन का भी कोई साधन नहीं है। मै एक निर्धन परिवार से संबंध रखता हूँ। मेरे पिताजी की आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय है जिसके कारण मै बाहर में आवास लेकर रहने में सक्षम नहीं हूँ।

अतः श्रीमान् से नम्र निवेदन है कि उपरोक्त बातों पर ध्यान देते हुए मुझे छात्रावास में जगह उपलब्ध कराने की कृपा की जाय। इसके लिए मैं सदा आपका आभारी रहूँगा।

आपका आज्ञाकरी छात्र

विनय कुमार

दिनांक 10.1.217

कक्षा–08 (ब)

कमांक 10

अथवा

ग्राहक एवं दुकानदार के मध्य संवाद–

ग्राहकः भाईसाहब! आपके पास बढ़िया चावल है क्या?

दुकानदारः हाँ सर! आइए ये देखिए कल ही चावल का ये नया पैकेट आया है। थोड़ा महँगा है पर खाकर आनंद आ जाएगा।

ग्राहकः दिखाइए– अच्छा! देखने में ठीक लग रहा है।

दुकानदारः सर! एक बार ले जाकर तो देखिए। कितना तोलूँ?

ग्राहक : 5 किलो। कितने पैसे हुए?

ग्राहकः धन्यवाद (चावल लेते हुए)

दुकानदारः सर! खाकर बताइएगा, आनंद आया कि नही।

(3) 1. आविष्कारों को आवश्यकता ने जन्म दिया।

2. वर्तमान की अनेक सुख–सुविधाओं का श्रेय विज्ञान को जाता है।

3. आवागमन में दिक्कत महसूस होने पर द्रुतगामी वाहनों का आविष्कार हुआ।

4. आविष्कारों ने हमें नई–नई वस्तुएँ प्रदान की।

5. मनुष्य बुद्धि के विकास के साथ–साथ वातावरण के प्रति अपना समायोजन करना चाहता है।

(4) 1. समस्या आने पर हम दूसरों की सहानुभूति चाहते है।

2. हम मुश्किलों का रोना रोते है पर समाधान के बारे में नहीं सोचते।

3. समस्या आने पर हम स्वयं द्वारा किए गए कार्यों का मूल्यांकन करना भूल जाते है।

4. परिस्थितियों का ठीक–ठाक मूल्यांकन कर हम समाधान तक पहूँच सकते है।

5. किसी भी समस्या का हल उसकी जड़ में होता है।

(5) 1. ईद के मुबारक मौके पर भी उसके घर में अन्न का एक दाना नहीं था इसलिए अमीना अपनी कोठरी में रो रही थी।

2. हामिद को दादी के हाथ रोटी बनाते समय तवे से जल जाते थे इसलिए वह मेले से चिमटा लाता है।

3. पतोहू को लगता था कि उसके जाने के बाद बालगोबिन भगत का ख्याल रखने वाला कोई नहीं है अतः वह उनको छोड़कर जाना नहीं चाहती थी।

4. स्वर्णरेखा नदी राँची,धनबाद,सिंहभूम एवं बालासोर जिलों से होकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

5. "कनक" शब्द का प्रयोग दो अर्थों में होता है। एक अर्थ में कनक को सोना तथा दूसरे रूप में कनक का अर्थ धतूरा भी होता है।

6. गाँव के किसान सिरचन को बेकार ही नहीं बेगार समझते थे। वह सिरचन को मुफ्तखोर, कामचोर एवं चटोर मानते थे।

7. ठेस कहानी में आए विभिन्न पात्रों के नाम है– सिरचन , मानू, मँझली भाभी , चाची, लेखक की माँ एवं लेखक स्वयं।

8. वकील साहब सुखी नहीं है क्योंकि अपने घर के बगल में रहने वाले बीमा एजेंट के वैभव को देखकर उन्हें ईर्ष्या होती है।

(6) अप्रैल का महीना था। धूप गहराने लगी थी। नंगे पैर खेमा कोल्हू के बैल की तरह घूमता रहता था। उसके पैर जलते थे। इसलिए जब वह जूठे गिलास धोने जाता तो पहले अपने पैर धोता ,जलते पैरो ' पर पानी गिराने से उसे क्षणिक तसल्ली मिलती थी।

अथवा

लिफ्ट का प्रयोग केवल राजपत्रित पदाधिकारी ही करते थे अन्य कर्मचारियों को सीढ़ी से आना जाना पड़ता था। कर्पूरी ठाकुर को इसमें सामंती प्रथा की बू आई। अतः वरीय पदाधिकारी के प्रतिरोध के बावजूद उन्होंने लिफ्ट का प्रयोग सबके लिए आम कर दिया।

SET - 4

1	घ
2	ग
3	ग
4	घ
5	घ
6	ख
7	ख
8	ग
9	ग
10	घ
11	क
12	ग

13	क
14	ग
15	ग
16	ग
17	घ
18	ख
19	घ
20	घ
21	ख
22	ग
23	क
24	ख
25	ख
26	घ
27	ग
28	ग
29	ग
30	ख
31	क
32	ग
33	घ
34	घ
35	ग
36	क
37	क
38	ग
39	ख
40	क
41	क
42	ग
43	क
44	क
45	क
46	क
47	घ
48	क
49	क
50	ख